''शिक्षा एवं जनसंख्या नियंत्रण''

डॉ० कुसुम कुमारी

भारत की जनसंख्या वर्ष 1991 मे 84.6 करोड़ थी जो 2011 में बढ़कर 1 अरब 30 करोड़ से भी अधिक हो गई हैं। प्रत्येक वर्ष भारत की जनसंख्या में श्रीलंका की सम्पुर्ण जनसंख्या के बराबर वृद्धि हो जाती है। चार वर्ष में भारत की जनसंख्या उतनी बढ़ जाती है कि जितनी कि ब्रिटेन की कुल जनसंख्या है। भारत की जनसंख्या वृद्धि गिनती में संयुकत राज्य अमेरिका, रूस, ब्रिटेन, फ्रांस तथा जर्मनी की जनसंख्या वृद्धि के कुल योग के बराबर होती है। वर्तमान भारत की जनसंख्या 1 अरब 30 करोड़ है। स्मरणीय है कि 1850 ई० में 100 करोड़ ही सम्पूर्ण संसार की जनसंख्या थी। अतः भारत की जनसंख्या में जिस तीव्र गति से वृद्धि हो रही है, वह निश्चित रूप से चिन्ता का विषय है।

जनसंख्या वृद्धि की दृष्टि से विश्व में भारत का चीन के बाद दूसरा स्थान है। पृथ्वी पर हर छठवाँ व्यक्ति भारतीय है। जनसंख्या में वृद्धि के फलस्वरूप नियोजित आर्थिक विकास के सारे प्रयास निष्फल सिद्ध हो रहे हैं तथा देश में भोजन, वस्त्र एवं आवास की समस्या विकराल होती जा रही है। अद्‌भुत औषधियों के अन्वेषण और आर्थिक सम्पन्नता में सतत् सुधार के परिणामस्वरूप मृत्यु की सम्भावना घटती जा रही है, लेकिन उसी अनुपात में जन्म दर में कमी नजर नहीं आ रही है। फलस्वरूप जनसंख्या में अभूतपूर्व वृद्धि होती जा रही है।